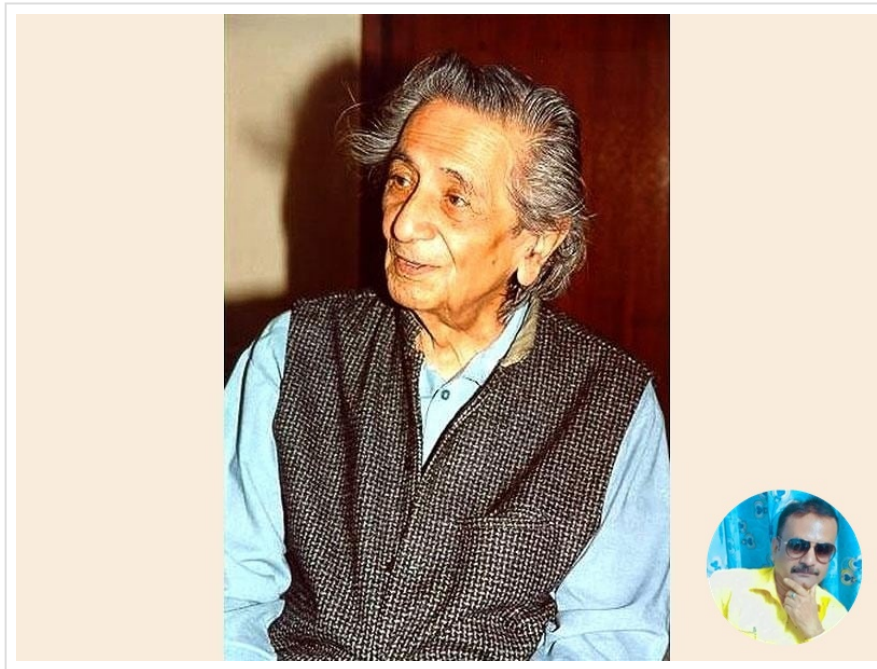


भीष्म साहनी की 'पाली' कहानी में भारत-विभाजन की त्रासदी का आलोचनात्मक विश्लेषण



1. भूमिका

हिन्दी साहित्य में भारत-विभाजन की विभीषिका पर केंद्रित विपुल साहित्य रचा गया है, जिसमें भीष्म साहनी की '**पाली**' कहानी का स्थान सर्वोपरि और अत्यंत विशिष्ट है। भीष्म साहनी केवल एक संवेदनशील कथाकार ही नहीं, बल्कि समकालीन समाज और इतिहास के सूक्ष्म दृष्टा भी थे। विभाजन की पीड़ा को उन्होंने स्वयं नज़दीक से देखा और झेला था, यही कारण है कि उनकी कहानियों में यह त्रासदी राजनीतिक दस्तावेज़ न बनकर अत्यंत यथार्थ, मार्मिक और मानवीय बन पड़ा है।

'पाली' कहानी केवल एक बालक की नियति की कथा नहीं है, बल्कि यह विभाजन के दौर में बिछड़े लाखों परिवारों, खंडित होते रिश्तों, जबरन बदलती धार्मिक पहचान और संकट में फंसी मानवता का सजीव महाकाव्य है। लेखक ने इस कहानी के माध्यम से यह सिद्ध किया है कि विभाजन ने केवल भौगोलिक सीमाओं का बंटवारा नहीं किया, बल्कि मनुष्यों के हृदय, संस्कृति और शाश्वत मानवीय मूल्यों को भी गहरे घाव दिए।

2. संदर्भ एवं कथावस्तु का संक्षेप

प्रस्तुत विवेचन हिन्दी के सुप्रसिद्ध कथाशिल्पी **भीष्म साहनी** द्वारा रचित कालजयी कहानी '**पाली**' पर आधारित है। यह कहानी सन् 1947 के भारत-विभाजन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर बुनी गई है। कहानी का मुख्य पात्र 'पाली' एक अबोध और मासूम बालक है, जो विभाजन की *afra-tari* में अपने माता-पिता से बिछड़ जाता है।

अकेले छूटे इस बच्चे को एक निःसंतान मुस्लिम दंपति (शकूर अहमद और उनकी पत्नी) सहारा देते हैं और उसे अपने सगे बेटे की तरह पालते हैं। समय बीतने पर बालक का नाम और मजहब बदलकर 'अल्ताफ' हो जाता है। बरसों बाद, जब भारत में रह रहे उसके वास्तविक माता-पिता (मनोहर लाल और कौशल्या) उसे खोज निकालते हैं, तो बालक के जीवन में पहचान, प्रेम और संबंधों का एक नया और भयानक द्वंद्व खड़ा हो जाता है। इसी केंद्रीय बिंदु के इर्द-गिर्द साहनी जी ने विभाजन की वास्तविक मानवीय त्रासदी को उकेरा है।

3. भारत-विभाजन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

सन 1947 में सत्ता के हस्तांतरण के साथ भारत का विभाजन दो राष्ट्रों—भारत और पाकिस्तान—के रूप में हुआ। यह विभाजन महज़ एक राजनीतिक मेज पर खींची गई रेखा नहीं था, बल्कि आधुनिक मानव इतिहास की सबसे बड़ी विस्थापन त्रासदियों में से एक था। रातों-रात करोड़ों लोग अपने ही वतन में बेगाने हो गए। लाखों लोग सांप्रदायिक दंगों की वेदी पर चढ़ गए, हजारों परिवार बिखर गए और असंख्य महिलाओं व बच्चों को अकल्पनीय यातनाएं सहनी पड़ीं। भीष्म साहनी ने 'पाली' में इन्हीं ऐतिहासिक यथार्थों को एक मासूम बच्चे की आंखों से दिखाकर विभाजन की भयावहता को और अधिक घनीभूत कर दिया है।

4. 'पाली' कहानी में विभाजन की त्रासदी के विभिन्न आयाम

4.1. परिवारों के बिछुड़ने की हृदयविदारक त्रासदी

'पाली' कहानी का सबसे कारुणिक पक्ष है—हंसते-खेलते परिवारों का अचानक बिखर जाना। विभाजन के समय मची भगदड़, मार-काट और दहशत के बीच छोटा बालक पाली अपने माता-पिता की उंगली से छूट जाता है। माता-पिता अपने कलेजे के टुकड़े को खो देते हैं और बच्चा एक अनजानी, हिंसक दुनिया में अकेला रह जाता है। यह घटना केवल मनोहर लाल के परिवार की नहीं, बल्कि विभाजन के दौरान बिछड़े उन लाखों अनाम परिवारों की सामूहिक चीख है, जिनके घाव कभी नहीं भर सके।

4.2. सांप्रदायिक हिंसा और भय का यथार्थ चित्रण

कहानी में उस दौर की सांप्रदायिक नफरत का बेहद सजीव चित्रण है। चारों तरफ लूटपाट, आगजनी, कत्लेआम और असुरक्षा का माहौल है। जो पड़ोसी कल तक सुख-दुख के साथी थे, वे धार्मिक कट्टरता के नशे में एक-दूसरे के खून के प्यासे हो गए हैं। इस हिंसक माहौल का सबसे क्रूर प्रभाव समाज के सबसे कमजोर हिस्से—महिलाओं और बच्चों—पर पड़ता है। साहनी जी बिना किसी अतिशयोक्ति के इस भयावह सच को पाठकों के सामने रखते हैं।

4.3. विस्थापन की असहनीय पीड़ा

विभाजन ने रातों-रात इंसानों को 'शरणार्थी' (रिफ्यूजी) बना दिया। लोगों को अपने पुश्तैनी घर, लहलहाते खेत, स्थापित व्यापार, बचपन की स्मृतियां और अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा सब कुछ छोड़कर खाली हाथ भागना पड़ा। पाली के माता-पिता भी इसी त्रासदी से गुजरते हैं। लेखक यह स्पष्ट करते हैं कि विस्थापन केवल भौगोलिक स्थान का बदलना नहीं है, बल्कि मनुष्य का अपनी जड़ों से पूरी तरह उखड़ जाना है।

4.4. पहचान का संकट (Tragedy of Identity)

कहानी में बालक का नाम 'पाली' से बदलकर 'अल्ताफ' होना और फिर वापस भारत लाकर उसे 'पाली' बनाने की जिद, पहचान के इसी गहरे संकट को दर्शाती है।

राजनीति और धर्म के ठेकेदार एक अबोध बच्चे पर अपनी-अपनी धार्मिक पहचान थोपना चाहते हैं। बालक का बाल-मन समझ नहीं पाता कि एक झटके में उसकी भाषा, पहनावा, मजहब और नाम कैसे बदल जाते हैं। यह विभाजन द्वारा जनित अस्तित्वगत संकट का सबसे तीखा उदाहरण है।

4.5. मासूम बचपन पर कुठाराघात

पाली एक छोटा बच्चा है, जिसे न तो राजनीति की समझ है और न ही मजहबी सीमाओं की। लेकिन इस नफरत की सबसे बड़ी कीमत उसी को चुकानी पड़ती है। उसका सहज बचपन छीन लिया जाता है। वह लगातार एक अज्ञात भय, असुरक्षा और मानसिक अंतर्द्वंद्व में जीने को मजबूर हो जाता है। लेखक रेखांकित करते हैं कि किसी भी राजनीतिक स्वार्थ या युद्ध का सबसे पहला शिकार मासूम बचपन ही होता है।

4.6. सामाजिक व मानवीय संबंधों का विघटन

विभाजन की आग ने सदियों पुराने सामाजिक सद्भाव, साझी संस्कृति (गंगा-जमुनी तहजीब) और आपसी विश्वास को स्वाहा कर दिया। धर्म के नाम पर इंसानी रिश्तों का कत्ल कर दिया गया। कहानी इस विघटन को बेहद सूक्ष्मता से दिखाती है कि कैसे सांप्रदायिकता इंसानी जज्बातों पर हावी होकर समाज को खोखला कर देती है

4.7. 'शुद्धि आंदोलन' और समाज की संकीर्णता पर प्रहार

कहानी का उत्तरार्ध विभाजन के बाद की एक और सामाजिक विकृति को उजागर करता है। जब पाली वर्षों बाद अपने वास्तविक हिंदू माता-पिता के पास भारत लौटता है, तो समाज उसे सहज रूप से स्वीकार नहीं करता। उसे 'म्लेच्छ' या 'अपवित्र' मानकर समाज के ठेकेदार उसकी 'शुद्धि' (मुंडन और हवन) की शर्त रखते हैं। भीष्म साहनी यहाँ दोनों तरफ की कट्टरता पर करारा प्रहार करते हैं—एक तरफ यदि उसे जबरन 'अल्लाफ' बनाने की जिद थी, तो दूसरी तरफ उसे जबरन 'शुद्ध' करने का ढोंग। इन दोनों पाटों के बीच मासूम पाली की आत्मा पिसती रहती है।

4.8. मातृत्व और पितृत्व की सार्वभौमिक करुणा

कहानी में दो अलग-अलग मजहब के परिवारों की पितृत्व और मातृत्व की भावना को समान धरातल पर दिखाया गया है। एक तरफ पाली के जन्मदाता माता-पिता हैं जो बरसों तक उसकी याद में तड़पते हैं, तो दूसरी तरफ शकूर अहमद और उनकी पत्नी हैं जिन्होंने रूढ़िवादी समाज के विरोध के बावजूद पाली को जी-जान से चाहा। जब पाली को वापस ले जाने की बात आती है, तो दोनों परिवारों की वेदना पाठक को झकझोर देती है। माता-पिता का स्नेह किसी सरहद या मजहब का मोहताज नहीं होता।

4.9. बाल मनोविज्ञान का सूक्ष्म चित्रण

साहनी जी ने पाली के भीतर चल रहे मनोवैज्ञानिक द्वंद्व को बहुत गहराई से उकेरा है। पाली के मन में दोनों परिवारों के प्रति गहरा प्रेम है। वह अपने पालक माता-पिता (अब्बू और अम्मी) को भी नहीं छोड़ना चाहता और अपने जन्मदाता माता-पिता के प्रति भी आकर्षित है। दो घरों, दो नामों और दो संस्कृतियों के बीच फंसा पाली का यह अंतर्मन कहानी का सबसे मार्मिक और विचारणीय पक्ष है।

4.10. विभाजन के स्थायी और अमिट घाव

यह कहानी स्थापित करती है कि विभाजन महज़ 1947 की एक सामयिक घटना नहीं थी, बल्कि यह एक कभी न भरने वाला ऐसा नासूर है जिसके घाव पीढ़ियों तक रिसते रहे। घर बदल गए, नाम बदल गए, लेकिन दिलों में जो दूरियां पैदा हुईं, उसने इंसानी जिंदगी की दिशा हमेशा के लिए बदल दी। इस दृष्टि से 'पाली' एक ऐतिहासिक जीवंत स्मृति है।

5. धर्म से ऊपर मानवता की स्थापना एवं संदेश

यद्यपि 'पाली' कहानी का ताना-बाना एक महात्रासदी पर बुना गया है, तथापि इसका अंतिम संदेश निराशा का नहीं, बल्कि आशा, करुणा और मानवता का है। शकूर अहमद का परिवार जिस तरह पाली को पालता है, वह यह साबित करता है कि **मानवता का धर्म किसी भी संस्थागत मजहब से कहीं ऊंचा है।**

कहानी का मूल संदेश यही है कि राष्ट्र की सीमाएं, जातियां और धर्म मनुष्यों द्वारा निर्मित संकीर्ण दीवारें हैं, जबकि प्रेम और सह-अस्तित्व ही शाश्वत सत्य हैं। लेखक इसके माध्यम से समाज को सांप्रदायिक सद्भाव अपनाने और घृणा की राजनीति को त्यागने की पुरजोर प्रेरणा देते हैं

6. उपसंहार

निष्कर्षतः, भीष्म साहनी की 'पाली' हिन्दी कथा-साहित्य की एक कालजयी और मील का पत्थर रचना है। इसमें भारत-विभाजन की विभीषिका को केवल आंकड़ों या राजनीतिक घटनाओं के रूप में नहीं, बल्कि मानवीय संवेदना और आत्मा के स्तर पर आंका गया है। बिछड़ते परिवार, विस्थापन का दंश, पहचान का संकट, दोनों पक्षों की धार्मिक संकीर्णता और इन सबके बीच से झांकती मानवता की विजय—ये सभी तत्व इस कहानी को श्रेष्ठ बनाते हैं।

पाली का चरित्र इस बात का जीवंत प्रतीक है कि बड़े-बड़े सत्ताधारियों के निर्णयों की सबसे क्रूर कीमत हमेशा बेकसूर जनता चुकाती है। अंततः, कहानी यह विश्वास जगाती है कि नफरत की आंधियों के बीच भी अगर इंसानियत का दीया जलता रहे, तो समाज को पूरी तरह नष्ट होने से बचाया जा सकता है।

7. संदर्भ-ग्रंथ (Bibliography)

1. साहनी, भीष्म — **पाली**, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. साहनी, भीष्म — **प्रतिनिधि कहानियाँ**, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. डॉ. नगेन्द्र — **हिन्दी साहित्य का इतिहास**, मयूर पेपर्सबैक्स।
4. सिंह, डॉ. बच्चन — **आधुनिक हिन्दी कहानी : स्वरूप और विकास**, लोकभारती प्रकाशन।
5. सिंह, डॉ. नामवर — **कहानी : नई कहानी**, राजकमल प्रकाशन।
6. विश्वविद्यालयीय समीक्षात्मक आलेख एवं शोध पत्रिकाएं (विभाजन केंद्रित अंक)।